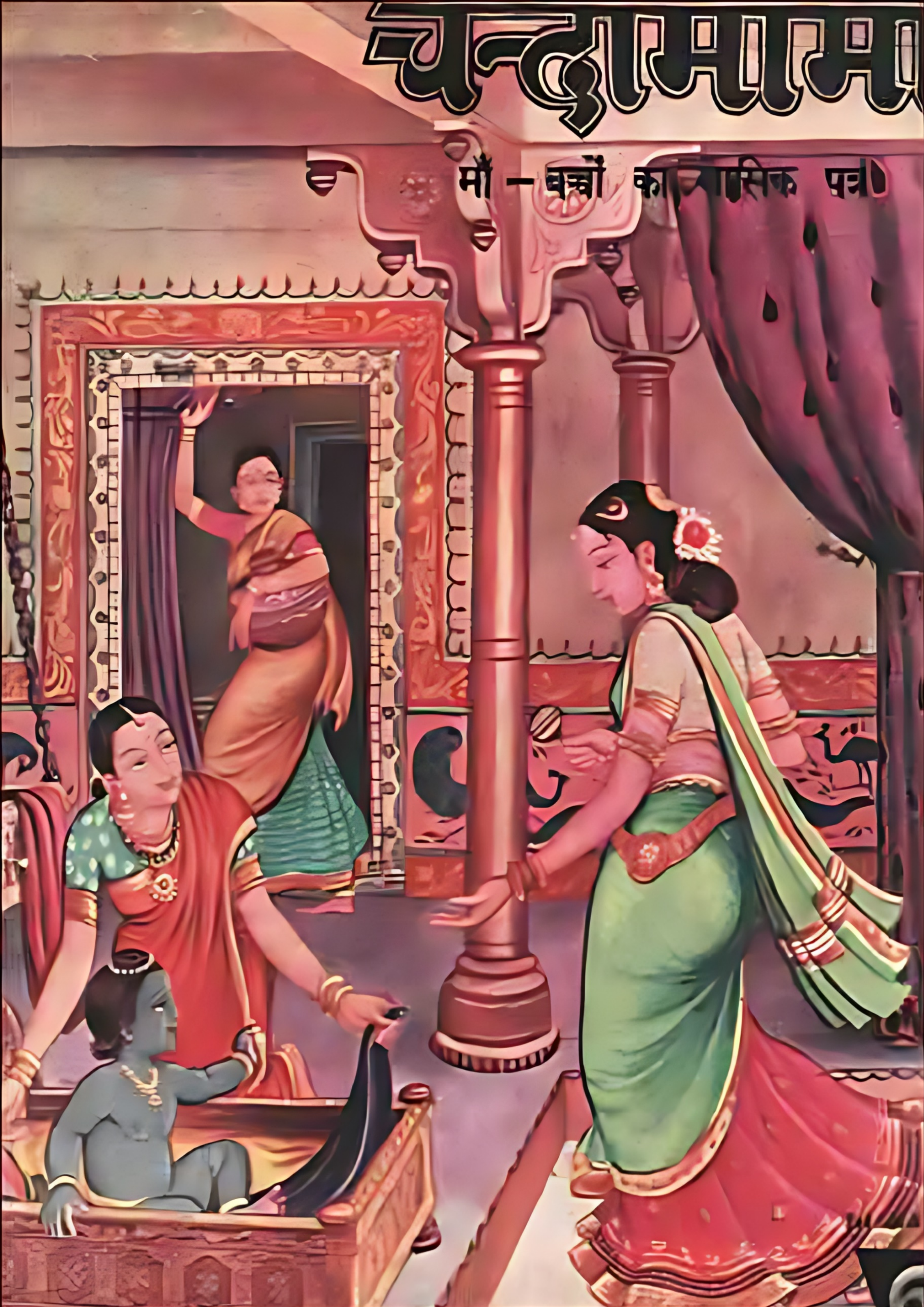

चन्दामाम
माँ – बच्चों का मासिक पत्र



एक राजा था। उसकी दो रानियाँ थी। बड़ी रानी अपने पति से सच्चा प्रेम करती थी। लेकिन छोटी रानी बड़ी ही कुटिल थी। वह किसी न किसी तरह राजा और बड़ी रानी को मार कर खुद राज करना चाहती थी। इसलिए उसने एक दिन राजा के नाई को बुलाया। नाई बेचारा डरते डरते छोटी रानी के महल में गया। छोटी रानी ने नाई को देखते ही सभी दास दासियों को किसी बहाने से बाहर भेज दिया। तब एकान्त में उसने नाई से कहा - "ठाकुर ! तुम्हें मेरा एक काम करना होगा। अगर तुमने यह काम कर दिया तो मैं तुमको मुँह-माँगा इनाम दूँगी। नहीं तो तुमको कुत्ते की मौत मरना होगा। समझे ?" नाई एक काँपते हुए कहा -"मालकिन का जो हुक्म होगा बजा लाऊँगा। मेरी जान बख्श दीजिए।" छोटी रानी ने धीरे से कहा -"देख ! मैं जो बात कहती हूँ, वह किसी को मालूम न हो। राजा की हजामत तू ही करता है न ?" नाई ने कहा - "हाँ।" "इस बार जब तू हजामत बनाने जाना, तब उस्तरे से राजा का गला काट लेना ! समझ गया न ! ले ये हजार रुपए की थैली। काम करके आएगा तो जो माँगेगा दूँगी। खबरदार ! यह बात किसी को मालूम न होने पाए।" इस तरह बार-बार चेता कर उसने नाई को विदा कर दिया। रुपए की लालच में पड़कर नाई राजा की जान लेने पर आमादा हो गया। वह बड़ी उतावले से राजा की हजामत के दिन की राह देखने लगा।

राजा के किले से पाँच मील दूर की दूरी पर एक छोटा सा गाँव था। उस गाँव में एक

गरीब ब्राह्मण रहता था। उस गाँव के और राजा के किले के बीच एक जङ्गल पड़ता था। वह ब्राह्मण हर रोज उसे जङ्गल को पार कर राजा के किले में आता और पोथी-पत्रा पढ़कर जजमानों से कुछ ना कुछ माँग ले जाता। इस तरह वह मुश्किल से अपनी जीविका चलाया करता था।

एक दिन हर रोज की तरह ब्राह्मण तड़के उठा। नहा धोकर पोथी-पत्रा काँख में दबाया और राजा के किले की ओर चल पड़ा। चलते-चलते जब वह बीच जङ्गल में पहुँचा तो अचानक एक भालू दिख पड़ा। भालू एक पेड़ से उतरकर नीचे आ रहा था। ब्राह्मण ने सोचा -अब उसकी जान गई। उसके पैर लडखडाने लगे। बदन से पसीना छूटने लगा। पर उसने किसी न किसी तरह अपने आप को सम्भाला। अचानक उसके भर्राए हुए गले से एक पद निकल गया -

"देख रहा टकटकी लगाकर

क्या मारेगा मुझको आकर"

लेकिन भालू ने उसे कुछ न किया। वह चुपचाप अपनी राह चला गया। ब्राह्मण खुशी-खुशी किले में पहुँचा



तो वह रोज की तरह पोथी-पत्रा बाँचना भूल गया। उसके बदले वह जहाँ जाता यही गाने लगता-

"देख रहा टकटकी लगाकर

क्या मारेगा मुझको आकर"

ब्राह्मण इस तरह किले की सभी सड़कों पर घूमा। लेकिन आज किसी ने उसे एक मुट्ठी भर चावल भी नहीं दिया। घर-घर घूमते घूमते ब्राह्मण ऊब गया। इतने में उसे जमीन पर कोयले का एक टुकड़ा दिख पड़ा। उसने



वह टुकड़ा उठा लिया और उससे राजा के महल के सामने की दीवार पर वही पद लिख दिया। फिर निराश होकर थका-माँदा घर लौट गया।

दूसरे दिन राजा ने हजामत बनवाने के लिए नाई को बुलवाया। नाई मन ही मन फूलता हुआ आ पहुँचा। ब्राह्मण ने जिस दीवार पर वह पद लिख दिया था, उसी के सामने आसन डालकर राजा हजामत बनवाने बैठा। नाई उस्तरा निकाल कर तेज करने लगा। इतने में उसका हाथ काँपने लगा। पर किसी तरह हिम्मत करके उसने उस्तरा हाथ में लिया और राजा के गले की तरफ गौर से देखने लगा। इतने में राजा की नजर दीवार पर लिखा ब्राह्मण के उस पद पर आ पड़ी। उसने जोर-जोर से पढ़ा-

"देख रहा टकटकी लगाकर

क्या मारेगा मुझको आकर ?"

यह सुनकर नई ने सोचा -"शायद राजा को मुझ पर शक हो गया है। इसलिए वह ऐसा कह रहा है।" बहुत तुरन्त उस्तरा वहीं छोड़कर गिरता पड़ता भागने लगा। उसे भागते देख सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और राजा के सामने ला खड़ा किया। अब राजा को भी शक हो गया। उसने डपट कर पूछा -"क्या बात है ? जल्द बता।"

डर से काँपता घिघियाता नाई राजा के पैरों पर गिर पड़ा। उसने रानी की सारी करतूत कह दी।

छोटी रानी की दुष्टता जानकर राजा को बड़ा अचरज हुआ। क्रोध से उसकी आँखें लाल हो गई। उसने छोटी रानी को कैद कर लाने की अज्ञा दी। छोटी रानी सिपाहियों

के बीच रोती-धोती आई। अपनी जान बचाने के लिए उसने बहुत बिनती-चिरौरी की। बहुत से आँसू बहाए। लेकिन राजा ने उसकी एक न सुनी। उसने उसे तुरन्त प्राण-दण्ड दिया। नाई को देश निकाला दिया गया। तब कहीं जाकर राजा का क्रोध शान्त हुआ।

थोड़ी देर बाद राजा सोचने लगा - "इसी पद की वजह से तो मेरी जान बची ! यह पद उस दीवार पर कैसे आ गया ? उसे किसने लिखा और क्यों लिखा ?" उसने तुरन्त सिपाहियों को बुलाकर ढिँढोरा पिटवा दिया -"जिसने यह गाना उस दीवार पर लिख दिया है, वह दरबार में हाजिर हो। उसे राजा साहब भारी इनाम देंगे।" यह सुनकर बहुत से लोग आपस में झगड़ते हुए आए। हर एक का दावा था कि उसी ने यह गाना लिखा है। लेकिन उनमें से कोई राजा के सवालों का जवाब न दे सका। वह सब किसी न किसी तरह अपनी जान बचाकर भागे।

दूसरे दिन गरीब ब्राह्मण फिर किले में भीख माँग ले जाने के लिए आया तो उसने सब जगह उस गाने की चर्चा सुनी। तब उसने महल के



सामने पहरा देने वाले सिपाही से जाकर कहा -"जाओ ! राजा से जाकर कहो कि जिसने उस दीवार पर वह गाना लिखा था, वह ब्राह्मण आया है।" राजा ने ब्राह्मण को तुरन्त अन्दर बुलवाया। उसने ब्राह्मण से पूछा -"तुमने क्यों वह गाना दीवार पर लिख दिया ?" तब ब्राह्मण ने भालू का सारा किस्सा का सुनाया।

तब राजा ने उस ब्राह्मण को भारी इनाम दिया और उसे अपने पुरोहित का पद दिया। अब ब्राह्मण की सारी गरीबी दूर हो गई और राजा की पुरोहिताई करते हुए अपने स्त्री और बाल बच्चों के साथ सुख से रहने लगा।



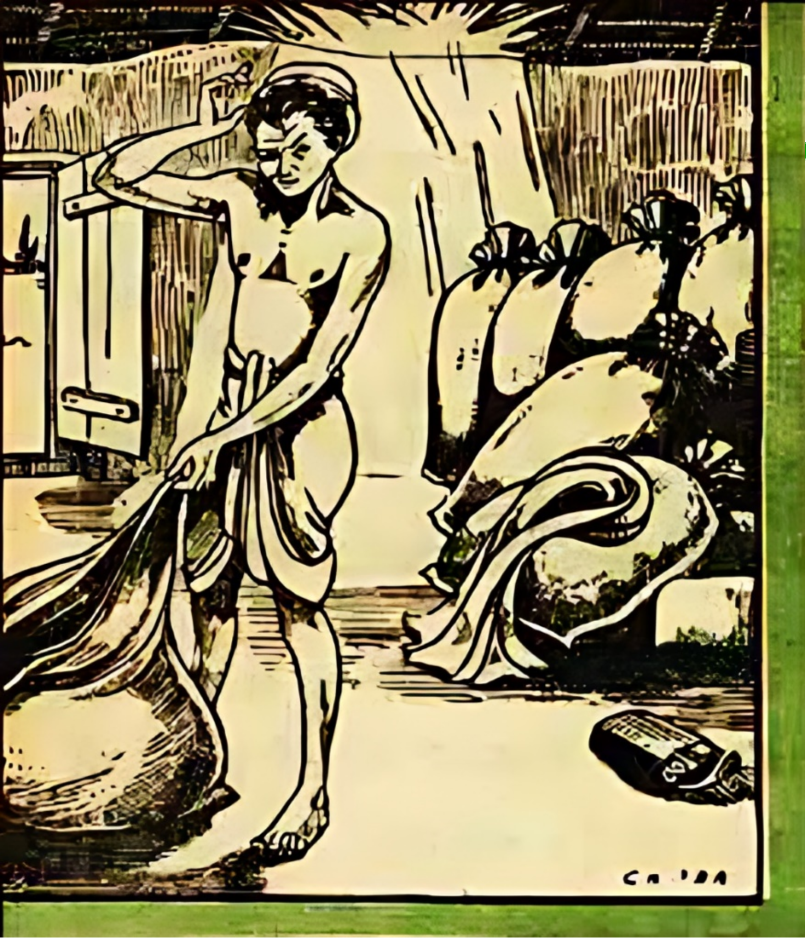
एक राजा था। उसके राज में एक नाई रहा करता था। एक दिन उसे एक जङ्गल से होकर पड़ोस के गाँव में जाना पड़ा। राह में एक बड़ा भारी पेड़ था। जब वह उस पेड़ के नीचे से गुजरा, तो उसे एक विचित्र कण्ठ-ध्वनि से यह सुनाई पड़ा -"बच्चे ! क्या तुम अशर्फियों से भरे सात बोरे चाहते हो ? बोलो; अगर तुम चाहते हो तो ले जा सकते हो।" नाई ने कर उठा कर चारों तरफ देखा। लेकिन कहीं कोई दिखाई न दिया। तब उसने सोचा -"जरूर इस पेड़ पर कोई भूत रहता है। वह मुझे चकमा देने के लिए यूँ कह रहा है। अब यहाँ से सर पर पैर रखकर भाग जाना ही अच्छा है।" यह सोचकर वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ। लेकिन वह थोड़ी ही दूर गया था कि उस पेड़ से फिर वही शब्द सुनाई दिया -"अरे भाई ! तुम्हीं को पुकार रहा हूँ। क्यों नाहक डर कर भागे जा रहे हो ? मैं सच कहता हूँ। तुम चाहो तो अशर्फियों के सात बोरे अभी ले जा सकते हो।"

इस बार नाई के मन में भारी लोभ पैदा हो गया। सात बोरे अशर्फियाँ ! वह लौटा और पेड़ के पास आकर बोला -"हाँ ! मैं सातों बोरे चाहता हूँ।"

"अच्छा ! तो अब तुम घर चले जाओ। अशर्फियों के सातों बोरे तुम्हारे घर पहुँच जाएँगे। विश्वास न हो, तो जा कर देख लो।" फिर उसी कण्ठ-ध्वनि ने जवाब दिया।

यह सुनकर नाई के मन में उतावलेपन के साथ-साथ अचरज भी पैदा हुआ। वह सरपट दौड़ता घर की ओर चला। वह जानना

अमर सिंह



चाहता था कि पेड़ से जो कण्ठ-ध्वनि सुनाई दी, उसमें कितनी सच्चाई है। घर जाकर उसने बड़ी उतावले के साथ दरवाजा खोला। देखता क्या है कि सामने ठीक सात बोरे पड़े हैं।

नई ने एक-एक करके सभी बोरों को खोलकर देखा। छः बोरे तो चमचमाती अशर्फियों से खचाखच भरे थे। लेकिन सातवाँ बोरा खाली था। उसमें सिर्फ कागज का एक पुर्जा पड़ा था। उस पुर्जे पर यों लिखा हुआ था -"मैंने तुम्हें अशर्फियों से भरे हुए छः बोरे दिए हैं। सातवें बोरे को अशर्फियों से भरना तुम्हारा काम है। अगर तुमने यह काम पूरा करने से पहले ही इन अशर्फियों में हाथ लगाया, तो तुम पर मेरा शाप पड़ेगा और तुम तुरन्त मर जाओगे। सातवें बोरे को अगर तुम अशर्फियों से न भर सकोगे, तो बाकी बोरे भी गायब हो जाएँगे।" इस पुर्जे को पढ़ते ही नाई पर अशर्फियों की धुन सवार हो गई। कैसे सातवाँ बोरा भरा जाए जिससे यह पूरे भी उसके हो जाएँ ?

लेकिन इतने बड़े बोरे को असरफियों से भरना क्या आसान काम था ? नाई ने निश्चय कर लिया कि चाहे जिस तरह हो, पेट काटकर वह सातवें बोरे को अशर्फियों से भरेगा।

पहले उसने घर में जितने सोने-चाँदी के कीमती सामान थे, सबको बेच-वाच कर अशर्फियाँ जमा की और उन्हें बोरे में डाल दिया। लेकिन उनसे बोरे का एक कोना भी न भरा।

अब नाई ने पेट पर खाना भी छोड़ दिया। इस तरह उसने बहुत दिन

भयङ्कर गरीबी में काटे। लेकिन बुरा न भरा। तब नाई ने एक दिन राजा के पास जाकर कहा -"हुजूर ! आज कल मैं भारी मुसीबत में पड़ गया हूँ। वेतन बिल्कुल काफी नहीं होता। हुजूर इस गरीब पर कृपा करें।"

तब राजा ने नाई पर तरस खाकर उस महीने से उसकी तनख्वाह दुगनी कर दी। नाई खूब किफायत करके सारा का सारा वेतन बचा कर उसे बोरे में डालने लगा।

कुछ महीने और बीत गए। लेकिन बोरा भरने का नाम न लेता था। तब नाई के मन में एक बड़ी भारी चिन्ता पैदा हो गई।

वह सोचने लगा -"ज़िन्दगी में कभी यह बोरा नहीं भरेगा और बाकी बोरे भी गायब हो जाएँगे। तो अब क्या किया जाए ?" वह रात दिन इसी चिन्ता में घुलने लगा।

कुछ दिन बाद वह फिर राजा की हजामत बनाने गया। नाई का उदास चेहरा देखकर राजा ने पूछा -"क्यों रे! जब से तुम्हारी तनख्वाह बढ़ी है, मालूम होता है तुम्हारी मुसीबतें भी



बढ़ गई है। तुम दिन-दिन दुबले पतले होते जा रहे हो। तुम्हारी वह मस्ती, वह खुशी कहाँ चली गई ? जब देखो रोनी सूरत बनाए रहते हो। क्या बात है ? कहीं तुम जादू के साथ बोरे के फेर में तो नहीं पड़ गए हो ?" यह सुनते ही नाई चौंक पड़ा। उसे आश्चर्य हुआ कि बोरों का रहस्य राजा को कैसे मालूम हो गया। "महाराज ! आपको मेरे मन की बात कैसे मालूम हो गई ?" उसने घबराकर कहा। राजा ने हँसते हुए जवाब दिया -"पगले ! बोरों की बात तो सारी दुनिया जानती है। क्या

तू अभी तक नहीं जानता था ? जङ्गल में उस पेड़ पर एक भूत रहता है। वह यह सातों बुरे जिसको देता है, समझ लो उसकी नींद हराम हो जाती है। वह चिन्ता में घुलघुल कर मर जाता है। उस भूत ने एक बार मुझे भी इसी तरह अपने फन्दे में फँसा लिया था। लेकिन मैंने उस सातवें बोरे को भरने की कोशिश न की। क्योंकि मैंने सोचा कि यह बोरे इतनी आसानी से मिले हैं। जरूर इसमें कुछ न कुछ धोखा होगा। मुझे सोने चाँदी की क्या कमी थी ! इसलिए मैंने उस पेड़ के पास जाकर कहा -'मैं तुम्हारे यह बोरे नहीं चाहता। लौटा लो अपनी अशर्फियाँ।' यह कहकर मैं घर लौट आया। देखा बोरे जैसे आए थे, वैसे ही गायब हो गए। इसलिए तुम भी तुरन्त उस पेड़ के पास जाकर वैसा ही कहो। नहीं तो नाहक़ अपनी जान गवाँओगे। जाओ, जरा भी देरी न करो।"

राजा की बातें सुनकर नाई को होश हुआ। उसका मोह दूर हो गया। उसने पेड़ के पास जाकर कहा -"तुम अपने बोरे लौटा लो। मैं तुम्हारी अशर्फियाँ नहीं चाहता। तब उसे कण्ठ-ध्वनि ने कहा -"अच्छा ! जाओ। मैं उन्हें लौटा लूँगा।" नाई ने जब घर लौट कर देखा तो वे बोरे से आए थे वैसे ही गायब हो गए थे। लेकिन नाई की बदनसीबी तो देखो! बोरों के साथ-साथ उसकी गाढ़ी कमाई के पैसे भी गायब हो गए।

इसलिए बड़े-बूढ़े कहते हैं -"लालच बुरी बला है !" लालच में पड़कर आदमी सूद ही नहीं असल भी गवाँ देता है। वही असली भूत है भाई!





बहुत दिन हुए एक देश में सुशीला नाम की एक लड़की रहती थी। उसका एक छोटा भाई भी था। बचपन में ही उनके माँ-बाप मर गए थे। उनकी देखरेख करने वाला दूसरा कोई न था। इसलिए कुछ दिन बाद उन्होंने सोचा कि -"चलो ! किसी दूसरे देश में चले जाएँ। देश देखने का आनन्द तो मिलेगा। यहाँ कौन सी दूध की नदी बहती है !" यह सोचकर वे लोग उसे देश से चले। राह में भाई को जोर की प्यास लगी। वह रोने लगा। तब सुशीला ने कहा -"भैया मेरे ! रोओ नहीं। थोड़ी दूर और चलो। ज्यों ही कोई कुआँ नजर आएगा, मैं तुम्हें पानी पिला दूँगी।" यों उसने भाई को समझा बुझा दिया। थोड़ी दूर जाने पर उन्हें एक घोड़े की टाप का चिन्ह दिखाई दिया। उसमें पानी भरा हुआ था। लड़के ने मचल कर कहा -"बहन ! देखो इसमें पानी है। मैं यह पानी पीकर अपने प्यास बुझाऊँगा।" तब सुशीला ने कहा -"वह मत पियो। नहीं तो तुम भी घोड़ा बन जाओगे।" और थोड़ी दूर जाने पर उन्हें गाय के खुर का चिन्ह दिखाई दिया। उसमें भी पानी भरा हुआ था। जब भाई ने हठ करके वह पानी पीना चाहा तो सुशीला ने उसे रोक दिया। कुछ दूर और जाने पर उन्हें भेड़ के खुर का चिन्ह दीख पड़ा। उसमें भी पानी भरा हुआ था। लड़का प्यास के मारे मरा जा रहा था। इसलिए इस बार बहन से कहे बिना ही जमीन पर लेटकर उसने वह पानी पी लिया।

जैसे ही वह पानी बच्चे के होठों से लगा कि वह एक मेमना बन गया। वह अपनी छोटी पूँछ हिलाते हुए उछलने कूदने लगा। सुशीला ने जब पीछे मुड़कर देखा तो उसका भाई नदारद ! वह उसे चारों ओर

श्यामशरण



ढूँढने लगी। इतने में एक मेमना उछलता कूदता आया और प्यार से उसका हाथ सूँघने-चाटने लगा। सुशीला को वहीं पास में एक भेड़ के खुर का चिन्ह दिखाई दिया। तुरन्त सारा माजरा समझ में आ गया। अब वह क्या करे ? रोती-कलपती वहाँ बैठ गई। वह मेमना भी उदास होकर मुँह लटकाए बगल में खड़ा हो गया।

थोड़ी देर में उसे देश का राजा उधर से निकला। उसने रोती हुई सुशीला को देखकर पूछताछ की। सुशीला ने अपनी सारी राम कहानी सुनाई। तब राजा ने कहा -"डरने की कोई बात नहीं। तुम मेरे साथ चलो। मैं तुमसे शादी कर तुम्हें अपनी रानी बनाऊँगा। तुम्हारे भाई को भी बड़े जतन से रखूँगा।" उसने उसे ढाँढस बँधाया।

सुशीला उसे मेमने को साथ लेकर राजा के साथ चली गई। राजा ने उससे ब्याह करके उसे अपनी रानी बना लिया और बड़े प्रेम से उसकी देखभाल करने लगा।

इस राज में एक कानी चुड़ैल रहती थी। जब उसने इस नई रानी का हाल सुना, तो वह जल उठी। उसने मन ही मन एक उपाय सोचा जिससे वह खुद रानी बन जाए। वह चुड़ैल किसी का सुख फूटी आँखों भी न देख सकती थी।

एक दिन राजा किसी काम से गाँव छोड़कर गया। चुड़ैल को जब यह मालूम हुआ तो उसने सोचा -"अच्छा मौका है।" उसने तुरन्त एक बुढ़िया का बेष बनाया और सुशीला के पास जाकर कहा -"बेटी ! भूख से मेरी जा रही हूँ। खाने को दो।" सुशीला तो बड़ी दयालु स्त्री थी। उसने उस बुढ़िया को बुलाकर बड़े प्रेम से खिलाया-पिलाया। उस चुड़ैल ने खाने पीने के बाद सुशीला की

आँख बचाकर पानी के घड़े में कोई दवा घोल दी। वह पानी पीते ही सुशील बीमार पड़ गई और दिन-दिन कमजोर होने लगी। दो दिन बाद वही चुड़ैल एक बैद्य का बेष धारण कर सुशीला के पास आई। उसने सुशीला से कहा -"बेटी ! तुम बीमार मालूम होती हो। मैं तुम्हें एक दवा दूँगा। तुम वह दवा बदन में लगाकर नदी में नहा लोगी, तो तुम्हारी बीमारी दूर हो जाएगी। बिचारी सुशीला ने उस कपटी बैद्य की बातों पर विश्वास कर लिया। दवा लगाकर वह दूसरे दिन नदी में स्नान करने गई। पानी में उतरकर उसने डुबकी तो लगाई। लेकिन फिर पानी के ऊपर न आ सकी। उस दवा का प्रभाव ही ऐसा था कि उसे लगाने के बाद पानी में जाते ही आदमी लोहे की तरह भारी हो जाता था। इसलिए वह पानी में डूबी ही रह गई। लेकिन मेमना यह सब देख रहा था। वह नदी के किनारे करुण स्वर में "बा" "बा" करके अपनी बहन को पुकारते हुए भटकने लगा।

उधर चुड़ैल ने सुशीला के कपड़े खुद पहन लिए। ठीक सुशीला का



रूप बना लिया। फिर बड़ी अकड़ के साथ राजमहल में जाकर सुशीला की जगह बैठ गई। शाम को राजा घर लौट कर आया तो उसे सुशीला को देखकर बड़ी खुशी हुई। उसे क्या मालूम था कि यह सुशीला नहीं है, एक चुड़ैल है और सुशीला नदी के अथाह जल में है। वह सुख से अपने दिन बिता रहा था।

चुड़ैल ने भी देख लिया कि मेमना हमेशा जाकर नदी के किनारे भटकता रहता है। उसे डर लगा कि कहीं उसका रहस्य न खुल जाए। उसने सोचा कि किसी न किसी तरह इससे पिण्ड छुड़ा लेना चाहिए।

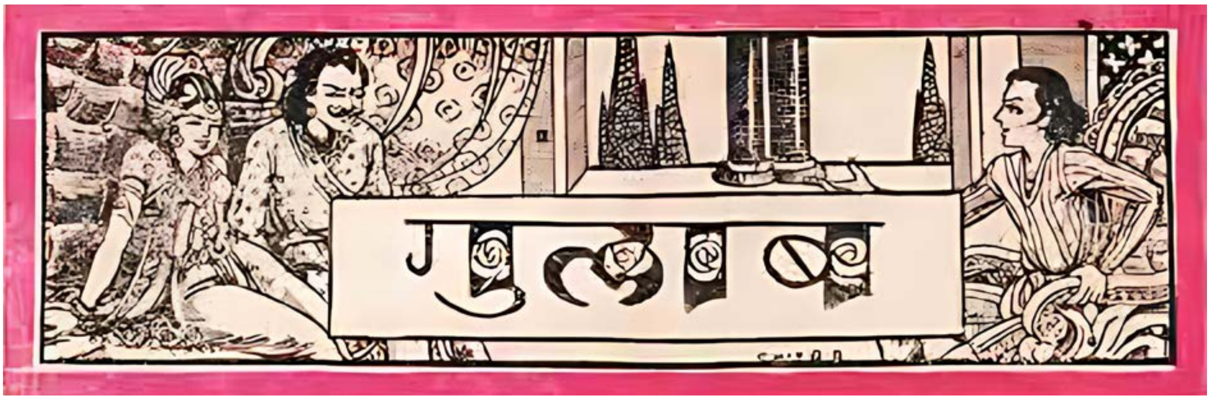
इसलिए उसने रसोइए को बुलाकर हुक्म दिया कि -"जाओ ! उस मेमने को मारकर मांस पका लाओ।"

यह बात जब राजा के कान में पड़ी तो उसने अचम्भे में आकर कहा - "यह कैसी बात है !मेमना तो तुम्हारा भाई है न ! तुम्हारे मन में आज यह कैसी सूझी ?" चुड़ैल को इसका क्या पता था ! वह हैरान होकर बोली - "भाई हो या और कोई हो। मेरे मन में जो आएगा वही करूँगी । मैं उसे कभी जीता न छोडूँगी।"

यह बातें सुनकर मैं मेमना भागा और नदी के किनारे जाकर जोर-जोर से कहने लगा -"बहन ! बहन ! देखो, ये दुष्ट मुझे मार डालना चाहते हैं।" उसका मिमियाना सुनकर लोगों का कलेजा फटा जाता था। पानी के तले से सुशीला ने भी मैंने की पुकार का जवाब दिया। रानी की आज्ञा से मेमने को पकड़ ले जाने के लिए आए हुए नौकर ने जब यह सुना तो उसने सीधे राजा के पास जाकर सारा हाल कह दिया। तब राजा खुद नदी के नारे आया। उसने अपने कानों से फिर मेमने की पुकार और पानी के तले से सुशीला का जवाब सुना। उसने सुशीला की आवाज पहचान ली। झट उसने मछुआरों को बुलावाया। मछुआरों ने पानी में जाल फेंका। सुशीला जाल में पड़ी और पानी से बाहर निकली।

बाहर आते ही सुशीला ने तुरन्त मेमने को गले से लगा लिया। उसके गले से लगते ही मेमने ने फिर उसके भाई का रूप धारण कर लिया। राजा उन दोनों को लेकर तुरन्त महल में लौटा। आते ही उसने उसे चुड़ैल को पकड़कर एक खम्बे में बँधवाकर मार डाला। चुड़ैल के मर जाने से उसे राज का सङ्कट दूर हो गया। अब सुशीला अपने भाई के साथ सुख चैन से रहने लगी।





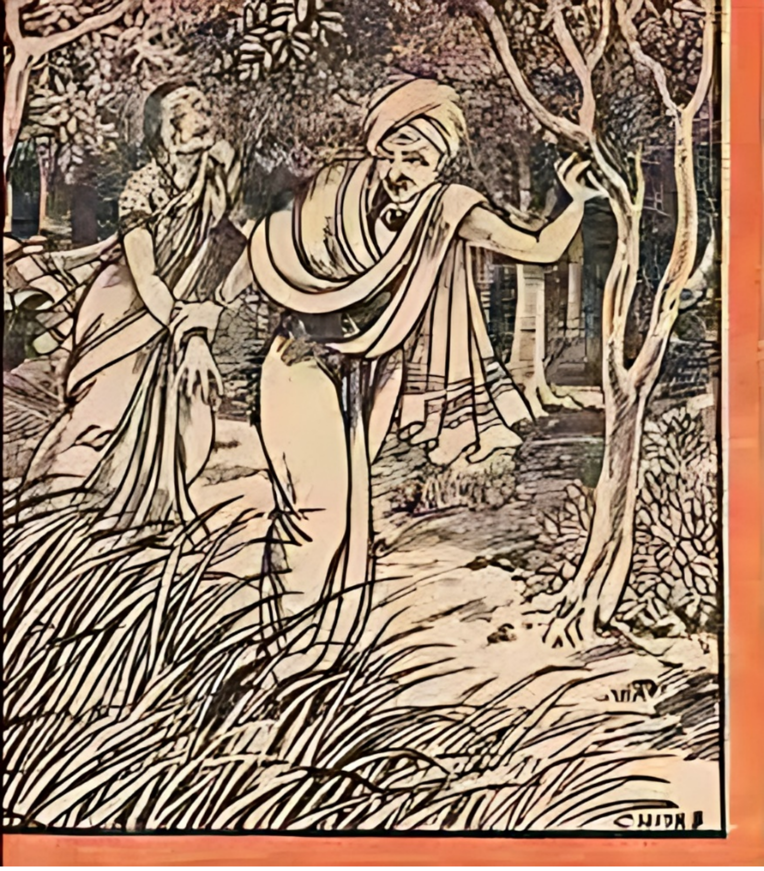
बहुत दिनों की बात है। कञ्चनपुर में राजा रत्नसिंह राज करता था। बहुत दिनों तक उसके यहाँ कोई सन्तान न हुई।

एक दिन एक देवी ने राजा को स्वप्न में दर्शन देकर कहा -"है राजा ! एक साल बाद रानी के गर्भ से एक लड़की पैदा होगी। उसका नाम तुम 'गुलाब' रखना। वह लड़की जब हँसेगी तो उसके मुँह से गुलाब झड़ेंगे। जब वह रोएगी तो आँखों से मोती झड़ेंगे।

ठीक एक साल बाद रानी को एक लड़की पैदा हुई। देवी ने जैसा कहा था वैसे ही उसके हँसते समय मुँह से गुलाब झड़ते थे और रोते समय आँखों से मोती। उस लड़की का नाम बड़े प्रेम से गुलाब रखा गया।

इस तरह साल दर साल बीत गए और गुलाब सयानी हुई। तब राजा ने गुलाब के लिए योग्य बार चुनने का एक बहुत अच्छा उपाय सोचा। उसने देश-विदेश में ढिँढोरा पिटवाया की -"जो राजकुमार कहानी सुना कर राजकुमारी को खूब रुला देगा और फिर खूब हँसा देगा उसी के साथ उसका ब्याह होगा।" यह खबर सुनकर देश-विदेश के राजकुमार गुलाब को कहानी सुनाने आ गए। उन लोगों ने उसे अच्छी-अच्छी कहानी सुनाई। लेकिन कोई भी अपनी कहानी से उसे न रुला सका और न हँसा ही शका। आखिर बहुत दिनों बाद पाञ्चाल देश का राजकुमार आया। उसने एक ऐसी कहानी सुनाई कि कहानी खत्म होते-होते राजकुमारी गुलाब अनेकों बार हँसी और रोई। तब राजा ने घोषित किया कि पाञ्चाल के राजकुमार के साथ गुलाब का विवाह होगा। दो एक दिन में बड़ी धूमधाम के साथ दोनों का ब्याह हो गया।

कुमारी शीला



लिए उसने एक उपाय सोच निकाला। गुलाब और उसकी भतीजी की सूरत एक दूसरे से मिलती-जुलती थी। अगर अगल-बगल में खड़ी हो जातीं तो पहचानना मुश्किल हो जाता कि दोनों में गुलाब कौन है। रानी मौके की ताक में रहने लगी।

इतने में एक दिन राजकुमार को किसी काम से राजधानी छोड़कर कहीं दूसरी जगह जाना पड़ा। मौका देखते ही रानी ने अपनी भतीजी को बुला भेजा। फिर बहुत सा रुपया देकर उसने राज-बैद्य को अपने वश में कर लिया। राज-बैद्य ने गुलाब को बेहोशी की दवा पिला दी। गुलाब जब बेहोश हो गई, तब रानी ने उसकी आँखें निकलवा कर अपनी भतीजी को और अपनी भतीजी की आँखें निकलवा कर गुलाब को लगवा दी। फिर उसने रातों-रात राज-बैद्य द्वारा गुलाब को कहीं बहुत दूर भिजवा दिया। राज-बैद्य गुलाब को एक बीहड़ जङ्गल में ले गया और एक कुएँ में डाल आया।

राजकुमार की माँ ने सब नौकरों को खूब इनाम दिया जिससे उसकी करतूत

एक सप्ताह तक राजकुमार अपने ससुराल में रहा। इसके बाद वह गुलाब को लेकर अपने देश लौट गया। ऐसी सुन्दर बहू देखकर राजकुमार के पिता की खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन राजकुमार की माँ गुलाब को देखकर जलने लगी क्योंकि वह अपनी भतीजी से राजकुमार का ब्याह करना चाहती थी। इसलिए जब राजकुमार गुलाब को ब्याह लाया तो रानी ऊपर से कुछ न बोली। पर भीतर ही भीतर उसने निश्चय कर लिया कि किसी न किसी तरह वह इस चुड़ैल को घर से निकाल कर ही दम लेगी। फिर उसकी भतीजी से राजकुमार का ब्याह आसानी से हो जाएगा। इसके

का भेद वे न खोलें। इस तरह सारा काम करके वह निश्चिन्त हो गई।

कुछ दिन बाद राजकुमार घर लौट आया। उसके महल में कदम रखते ही रानी की भतीजी उसके पैरों पर गिर पड़ी और आँखों से आँसू भरकर कहने लगी -"प्रियतम ! इतने दिनों तक मुझे अकेली छोड़कर आप कहाँ चले गए थे ? बड़े निर्दयी हैं आप।" रोते समय उसकी आँखों से आँसुओं के बदले मोती गिरे जिससे राजकुमार को उस पर शक करने का कोई कारण न रहा। उसे अपनी प्यारी गुलाब को आँसू बहाते हुए देखकर बड़ी दया आई। उसने उसे बड़े प्रेम से गले लगा कर आँसू पोछे और धीरज दिया।

लेकिन राजकुमार बहुत कोशिश करने पर भी उसे हँसा न सका। पहले वह बात-बात पर हँस देती थी। लेकिन यह नकली गुलाब थी न ! उसने गुलाब की आँखें तो लगा ली थी। इससे रोते समय उसकी आँखों से मोती बरसाते थे। लेकिन हँसने पर उसके मुँह से गुलाब तो झड़ते नहीं। क्योंकि मुँह तो उसका अपना ही था। इसलिए वह कभी हँसती न



थी। अगर कभी हँसी आ भी जाती तो मुँह में कपड़ा ठूँस देती थी।

उधर गुलाब को कुएँ में कराहती देखकर एक मछुआरे ने उसे बाहर निकाला और बड़े प्रेम से अपने घर ले गया। कुछ देर बाद जब गुलाब होश में आई तब मछुआरे ने पूछा - "बेटी ! तुम कौन हो ? तुम तो एक देवी के समान लग रही हो। तुम अन्धी कैसे हो गई ?क्या अन्धी होने के कारण ही तुम कुएँ में गिर पड़ी थी ? मुझे तुम अपना पूरा-पूरा हाल सुना दो। मैं हर तरह से तुम्हारी मदद करने को तैयार हूँ।



लेकिन गुलाब ने उसे अपना सच्चा हाल नहीं सुनाया। उसने कहा - "भैया ! तुम मुझे कुछ दिन तक अपने घर में रहने दो। इसके सिवा मैं और कोई मदद नहीं चाहती।" मछुआरे ने बड़ी खुशी से उसकी बात मान ली और बड़े प्रेम से उसे अपने घर में आश्रय दिया।

एक दिन गुलाब का पति शिकार खेलने के लिए इस जङ्गल में जा निकला। उसे एक हिरन दिखाई दिया। उसने अपने तीर से उसे मार डाला। हिरन के मरते ही मछुआरे के घर में गुलाब मर गई क्योंकि गुलाब की जान इस हिरन में बसती थी। मछुआरे ने बड़े रञ्ज से एक कब्र खोदकर गुलाब को दफना दिया।

राजकुमार अपने शिकार हिरन को घर ले गया। हिरन का मांस बना और पति-पत्नी दोनों ने खाया। एक साल बाद उस नकली गुलाब की एक सुन्दर लड़की पैदा हुई। गुलाब की तरह ही उस लड़की के हँसते समय गुलाब और रोते समय आँखों से मोती झड़ते थे। यह देखकर राजकुमार की रही सही शङ्का भी दूर हो गई। उसे पूरा विश्वास हो गया कि वही गुलाब है।

एक दिन एक देवी ने राजकुमार को स्वप्न में दर्शन देकर कहा -"है राजकुमार ! तुम जिसे अपनी पत्नी समझ रहे हो, वास्तव में बहु गुलाब नहीं है। उस दिन तुमने जब जङ्गल में तीर से हिरण को मार डाला, उस समय तुम्हारी गुलाब मछुआरे के घर में मर गई। यहाँ से बारह कोश पर एक जङ्गल है। जाकर देखो, वहीँ उसकी कब्र दिखाई पड़ेगी। उस कब्र पर एक सुन्दर गुलाब का पौधा उगा हुआ है। उसकी डालों में गुलाब के फूलों के साथ-साथ मोतियों के गुच्छे भी लटक रहे हैं। यही उसकी पहचान है। उस कब्र के पूर्व में एक तालाब है। उस तालाब

का पानी अगर तुम्हारी लाडली लड़की अपने हाथों से उस गुलाब के पौधे पर छिड़क देगी तो तुम्हारी असली पत्नी जी जाएगी। जी जाने पर भी वह अन्धी रहेगी क्योंकि तुम्हारी माँ ने उसकी आँखें निकाल कर नकली गुलाब को लगा दी है। अगर गुलाब को अपनी आँखें मिल जाएगी, तो वह फिर देखने लगेगी। जाओ ! इस तरह अपनी गुलाब को प्राप्त करो।"



सवेरा हुआ। राजकुमार अपनी छोटी लड़की को साथ लेकर गुलाब की खोज में चला। वह स्वप्न की बातों को जाँचना चाहता था। वहाँ जाने पर उसे देवी के कहे अनुसार गुलाब का पौधा दीख पड़ा। उसकी डालों में मोती की झालरें झूल ही थी। फिर वह लड़की को साथ लेकर तालाब की ओर चला। थोड़ी दूर जाने पर जब तालाब दिखाई दिया तो उसने अपनी लड़की से कहा -"बेटी ! चुल्लू में पानी भर लो और चलकर उस गुलाब पर छिड़को।" लड़की ने वैसा ही किया।

कब्र पर पानी के छींटे पढ़ते ही गुलाब उसमें से उठ खड़ी हुई। राजकुमार ने उसे देखते ही गले से लगा लिया। तीनों राजमहल लौटे। महल में पहुँचकर राजकुमार ने अपनी माँ को और नकली गुलाब को अपने पास बुलवाया। नकली गुलाब ने असली गुलाब को अपनी आँखें लौटा दी। उन आँखों के पाते ही गुलाब पहले जैसी हो गई। राजकुमार ने अपनी माँ, नकली गुलाब और राज-बैद्य तीनों को कैदखाने में डालने का हुक्म दे दिया। दुष्टों को अपनी करनी का फल मिला।

राजकुमार अपनी गुलाब और लाडली लड़की के साथ सुख से रहने लगा।



तीन बहरे

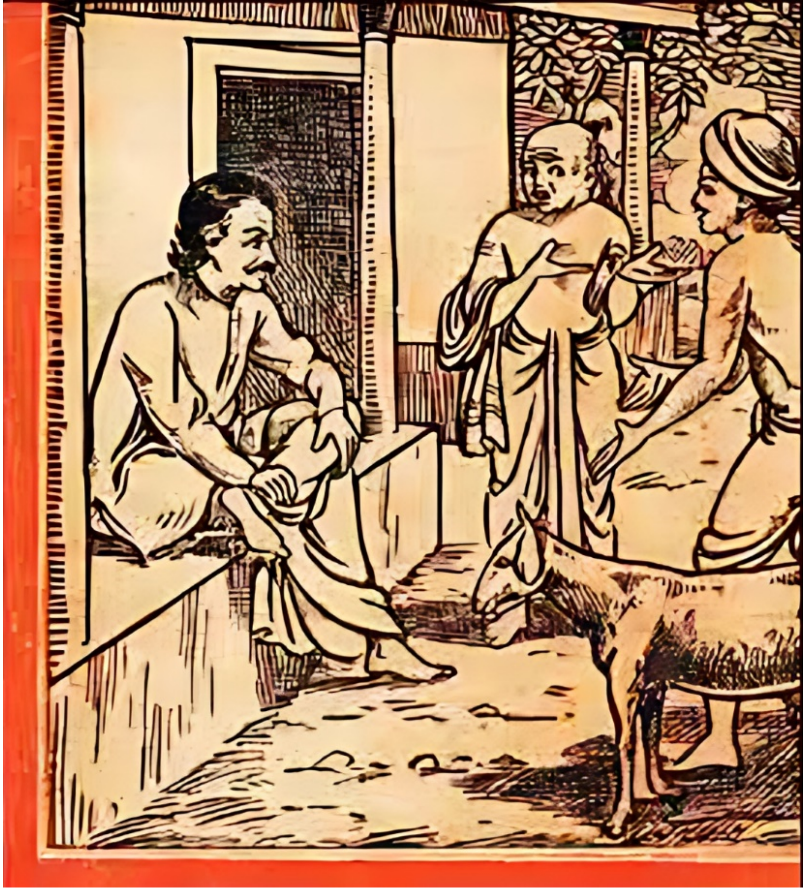
किसी गाँव में एक ग्वाला रहता था। वह बज्र-बहरा था। एक दिन वह गाँव के बाहर बकरियाँ चरा रहा था कि इतने में उसे किसी काम से घर जाना पड़ा।

उसी समय एक ब्राह्मण उधर से आ निकला। तब उसने उसको बुलाकर कहा -"ब्राह्मण देवता ! मुझे एक जरूरी काम से घर जाना है। अगर आप तब तक मेरी बकरियों को देखते रहिएगा, तो मैं लौटकर आपको एक लंगडी बकरी दूँगा।" यह कहकर वह घर चला गया। ब्राह्मण ने यह तो देखा कि ग्वाला उससे कुछ कह रहा है। लेकिन यह न जान सका कि वह कह क्या रहा है क्योंकि वह उससे भी बढ़कर बहरा था।

थोड़ी ही देर में ग्वाला घर से लौट आया। अपनी बकरियों को सही सलामत देखकर उसे बड़ी खुशी हुई। उसने अपने वचन के अनुसार एक लँगड़ी बकरी ब्राह्मण के पास ले जाकर कहा -"ब्राह्मण देवता ! मैंने आपको बड़ा कष्ट दिया। लीजिए अब आप अपनी यह लँगड़ी बकरी ले जाइए।" ग्वाले को एक लँगड़ी बकरी लाकर अपने सामने रखते देख ब्राह्मण ने झुँझलाकर कहा - "जा ! जा ! मैं क्या जानू कि तुम्हारी बकरी की टाँग कैसे टूट गई।" तब ग्वाले ने ब्राह्मण का ध्यान उस बकरी की टूटी टाँग की और आकर्षित करते हुए कहा -"वाह ! वाह ! तो क्या मैं बेईमान हूँ ! मैंने पहले ही कह दिया था कि मैं तुम्हें लँगड़ी बकरी ही दूँगा।"

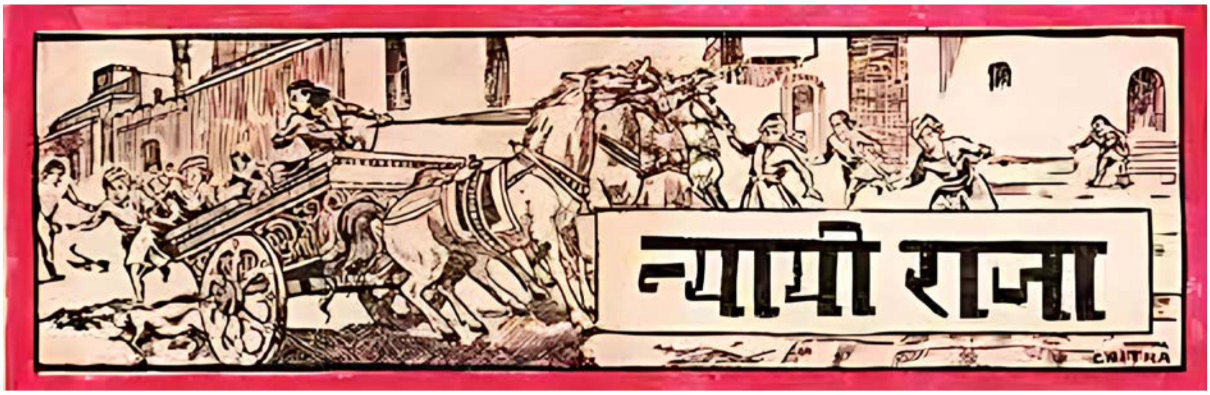
"यह तो खूब कही ! मैं क्यों तुम्हारी बकरी की टाँग तोड़ने जाऊँ ? मैं तो यहीं पेड़ की छाँव में बैठा हुआ था।" ब्राह्मण ने कहा। अब तो बड़ी चखचख मच गई। न तो ग्वाले की बात ब्राह्मण को मालूम होती थी और न ब्राह्मण की बात ग्वाले को। ग्वाले ने सोचा कि ब्राह्मण

'मसखरा'



बेईमानी करके उसकी एक अच्छी बकरी ले लेना चाहता है। ब्राह्मण ने सोचा कि बकरी की टाँग तोड़ने का अपराध नाहक उसके सिर मढ़ा जा रहा है। दोनों जोर-जोर से चिल्लाने लगे। "तुम चाहो तो यह लँगड़ी बकरी ले लो। नहीं तो अपना रास्ता नापो। मैं तुम्हें अच्छी बकरी कभी नहीं दूँगा।" ग्वाले ने सरगर्मी के साथ कहा। "मैं तुमसे कसम खा कर कहता हूँ कि मैंने तुम्हारी बकरी की टाँग नहीं तोड़ी।" ब्राह्मण ने जवाब दिया। आखिर दोनों झगड़ते झगड़ते उसे गाँव के मुखिया के घर गए।

उस दिन मुखिया के घर में भी महाभारत मच रहा था। सवेरे ही सवेरे उन्होंने अपनी श्रीमती जी से लड़कर कसम खाई थी कि मैं अब कभी तुम्हारे हाथ का छुआ नहीं खाऊँगा। इसीलिए बेचारे भूखे प्यासे अपने घर के बाहर चबूतरे पर बैठे हुए थे। ठीक उसी समय ब्राह्मण और ग्वाला उनके पास जा पहुँचे। "देखिए हुजूर ! यह ब्राह्मण मुझसे बेईमानी करना चाहता है।" यों शुरू करके ग्वाले ने अपनी सारी कहानी कह सुनाई। मुखिया जी ने कद्दू की तरह मुँह लटकाए ग्वाले का कहना सूना और ब्राह्मण की और नजर फेरी। तब ब्राह्मण ने बड़े करुणाजनक स्वर में अपनी राम कहानी सुनाते हुए कहा कि यह ग्वाला मुझ पर झूठ-मूठ की शिकायत कर रहा है जिससे आपको मुझ पर क्रोध आ जाए। लेकिन यह सब मुखिया जी को सुनाई पड़े तब न ! मुखिया जी ग्वाले और ब्राह्मण से भी ज्यादा बहरे थे। दोनों की बात सावधानी के साथ सुनकर उन्होंने कहा -"तुम दोनों हजार कहो। लाख कहो। मैंने तो अब कसम खा लिए की फिर कभी उसका मुँह नहीं देखूँगा।"



किसी समय चोल वंश के राजा तञ्जौर में राज करते थे। उन में एक का नाम धर्मचोल था। उनके राज में धाम चारों चरण चलता था। उनके राज में सिर्फ मनुष्यों के लिए ही नहीं, अबोध पशु पक्षियों के प्रति भी न्याय विचार होता था।

इस न्यायी धर्मचोल के बहुत दिनों बाद एक लड़का पैदा हुआ। उस लड़के का नाम 'नीतिचोल' रखा गया। राजा उसे बड़े प्यार से पालने पोसने लगा। धीरे-धीरे राजकुमार बड़ा हुआ। वह भी पिता की ही तरह बड़ा धर्मात्मा और दयालु निकला।

एक दिन राजकुमार रथ पर सवार होकर देव दर्शन करने के लिए मन्दिर की ओर चला। रथ बड़े बेग से जा रहा था कि एक बछड़ा उछलता कूदता आ गया और रथ के पहियों के नीचे गिरकर मर गया।

उस बछड़े का छटपटा कर मरते हुए देखते ही राजकुमार के होश हवास उड़ गए। उसके मुँह से कोई बात न निकली। थोड़ी देर बाद किसी न किसी तरह अपने आप को सम्हाल कर उसने कहा -"हे भगवान ! मैं बड़े प्रसन्नचित्त से तुम्हारे दर्शन के लिए घर से निकला था। लेकिन रास्ते में यह भयङ्कर पाप मेरे माथे चढ़ गया। यह बात सुनकर मृदुल हृदय वाले मेरे पिता न जाने क्या सोचेंगे। जब उन्हें मालूम होगा कि उनके लड़के को गौ हत्या का पाप लग गया है, तो वह न जाने कितने दुखी होंगे। छीः ! मैंने अपने पिता के निर्मल यश में कलङ्क लगा दिया। न जाने बछड़े की माँ इसे कहाँ-कहाँ खोजती फिरेगी ! और जब वह इसको यहाँ मरा पड़ा देखेगी, तो कितना बिलाप करेगी। हाय ! मैं अपनी आँखों से वह

रमा देवी

दृश्य कैसे देखूँ ? अपने पिता को कैसे मुँह दिखाऊँ ? नहीं। इससे तो बेहतर यही होगा कि इसके पहले ही मैं यह पापी शरीर त्याग दूँ। इस तरह राजकुमार मन ही मन बिलखने लगा।

वहाँ जो लोग जमा हो गए थे उन्होंने राजकुमार को बहुत समझाया-बुझाया। इतने में एक गाय करुण शोर में रँभाती वहाँ आ पहुँची । वह उस बछड़े की माँ थी। यों बछड़े को मरा पड़ा देख उसकी आँखों से जल की धारा वह चली। उसकी करुण चिल्लाहट बार-बार आकाश को भेद कर चारों ओर गूँजने लगी। उसका दुख देखकर लोगों की आँखों में बरवस आँसू निकल पड़े।

वह गाय वहाँ ज्यादा देर तक न ठहरी। वह वहाँ से सीधे राजा के महल में चली गई। वहाँ जाकर उसने दीवार से लटकती हुई सुनहरी जञ्जीर दाँतों से पड़कर खींची। तुरन्त राजा के कमरे में बँधी हुई न्याय की घण्टी टन टन बजने लगी। राजा जल्दी-जल्दी महल से नीचे उतर आया। जब उसने आँसू बहाती गाय को देखा, तो वह आश्चर्य में डूब गया। उसने तुरन्त पूछताछ की कि इस गाय को किसने सताया है जो



यह इस तरह आँसू बहा रही है। जब उसको सारा हाल मालूम हो गया, तो वह मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ा। उसके शोक का वारपार न रहा। क्योंकि उसको मालूम हुआ कि उसके इकलौते लड़के के हाथों ही यह घोर पाप हुआ है।

थोड़ी देर बाद राजा सचेत हुआ। सोचने विचारने के बाद उसने मन्त्री को बुलाया और कहा -"न्याय कहता है कि खून का बदला खून होता है। न्याय के आगे सभी समान हैं। इसलिए जिस रथ के नीचे इस गाय के बछड़े की जान गई है, उसी के नीचे राजकुमार की भी जान ले लो।" राजा का यह हुकुम सुनते ही मन्त्री

का दिल दहल गया ,लेकिन राजाज्ञा टालने का दुःसाहस वह कैसे कर सकता था ! नहीं तो राजकुमार की जान वह कैसे ले ? इस महान असमञ्जस में पड़कर मन्त्री ने कहीं जाकर आत्महत्या कर ली।

मन्त्री के मरने की खबर जब राजा को मालूम हुई तो वह स्वयं वहाँ गया जहाँ बछड़े की जान गई थी। उसने स्वयं वहाँ खड़े होकर राजकुमार को रथ के सामने कुचलवा डाला। इस तरह 'खून का बदला खून' पूरा हुआ। तब राजा ने कहा -"मैंने न्याय का पालन किया। लेकिन मन्त्री को और प्राण प्यारे पुत्र को खोकर मैं कैसे जीऊँ? कैसे राज करूँ? अब मेरे लिए इस राज-पाट में धन-धाम में क्या धरा है ? यह कहकर राजा ने आंखें मूँद भगवान का ध्यान किया और कटार निकालकर छाती में भोक लेनी चाही। ठीक उसी समय आकाशवाणी हुई -"राजन ! व्यर्थ आत्महत्या न करो। मैं धर्मदेव हूँ। मैंने तुम्हारा बहुत यश सुना था कि तुम्हारा राज में धर्म के चारों चरण है। तुम मनुष्य और पशु के लिए समान रूप से न्याय करते हो और तुम्हारा राज में कोई दुखी नहीं है। इसलिए मैंने तुम्हारी परीक्षा लेनी चाही। बड़ी खुशी की बात है कि तुम इस परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गए हो। इससे तुम्हारा यश और भी चमक उठेगा। तुम इसी तरह धर्म का पालन करते हुए युग युग तक सुख और शान्तिपूर्वक राज करो। राजा ने जब आँखें खोली, तो अचरज से देखा कि मन्त्री और राजकुमार हँसते हुए उसके सामने खड़े थे। धर्मदेव की कृपा से मरा हुआ बछड़ा भी जी उठा और उछलने कूदने लगा। यह देखकर गए उल्लास से हुङ्कारती की हुई दौड़ी और बछड़े के पास जाकर अत्यन्त आतुरता से उसे चूमने चाटने लगी। प्रजा की खुशी का ठिकाना न रहा।





एक समय एक गाँव में पुण्डरीक नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी का नाम था सुचरिता। दोनों स्त्री-पुरुष भगवान विट्ठलनाथ के बड़े भक्त थे।

एक बार उसे गाँव के सब लोग दल बनाकर झाँझ-मृदङ्ग-मजीरे आदि लेकर भजन कीर्तन करते हुए विट्ठलनाथ के दर्शन के लिए पण्ढरीपुर जाने लगे। यह सब देखकर सुचरिता ने अपनी पति से कहा -"हम भी इनके साथ पण्ढरीपुर क्यों न चले !"

"सोचो भी ! घर में बूढ़े और कमजोर माता-पिता को छोड़कर हम कैसे चले ? हमारे लिए तो इस घर में ही पण्ढरीपुर है। विट्ठलनाथ का ध्यान करते हुए माँ-बाप की सेवा करना ही हमारे लिए उसे सबसे बड़ा धर्म है।" पुण्डरीक ने कहा। सुचरिता का मन तो उन भक्तों के साथ जाने के लिए आतुर था। लेकिन पति की बात सुनकर वह कुछ न कह सकी। क्योंकि पति के वचन के विरुद्ध कुछ कहना उसके लिए असम्भव था। आखिर गाँव के तीर्थ यात्री पण्ढरीपुर चले गए और यह दोनों व्यक्ति घर पर ही रह गए। जो लोग पण्ढरीपुर गए थे, उनके घरों मैं भी बूढ़े रोगी या बच्चे कोई ना कोई घर में पीड़ित थे ही। लेकिन पुण्डरीक की तरह उनके मन में नहीं आया कि हम पण्ढरीपुर जाएँगे तो इनकी क्या हालत होगी। भक्तों ने सोचा हर एक आदमी को अपने कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। हम किसी के लिए पुण्य कमाना क्यों छोड़ दें ? इस तरह वे लोग निश्चिन्त होकर विट्ठलनाथ के दर्शन करने गए।

पुण्डरीक को उनके साथ न जाने की कोई चिन्ता न थी। वह रोज सवेरे उठकर सैकड़ो



दास दसियों से बढ़कर माँ-बाप की सेवा करता था। उसके बूढ़े माँ-बाप इतने कमजोर हो गए थे, कि उठ बैठ भी न सकते थे। इसलिए पुण्डरीक खुद उनके सारे शरीर में तेल लगाकर खूब मालिश करता। उन्हें गर्म पानी से नहलाता। फिर सफेद तौलिए से पोछ-पाँछ कर साफ कपड़े पहना देता और सहारा देकर पूजा गृह में बिठा आता। फिर पूजा की सारी सामग्री वहाँ लाकर रख देता।

पुण्डरीक के पिता बड़े भारी भक्त पण्डित और धर्मात्मा थे। लेकिन बुढ़ापे के कारण अब उनकी स्मरण शक्ति वैसी न रह गई थी। इसलिए मन्त्र पढ़ते-पढ़ते बीच में भूल जाया करते थे। ऐसे समय पुण्डरीक उनके निकट बैठकर सब कुछ याद कराता रहता था। बूढ़े की आँखों को अच्छी तरह न दिखाई देता था। इसलिए पूजा करते समय चन्दन, फल-फूल धूप-दीप आदि के लिए जब वह इधर-उधर टटोलने लगते तो पास बैठा पुण्डरीक झट उठाकर हाथ में दे देता। इसके बाद वह स्वयं विट्ठलनाथ की पूजा करके उन्हें प्रसाद देता। फिर अनेक तरह के पकवान खिला-पिला कर उन्हें खाट पर लिटा देता। इसके बाद वह खुद खाने बैठता था।

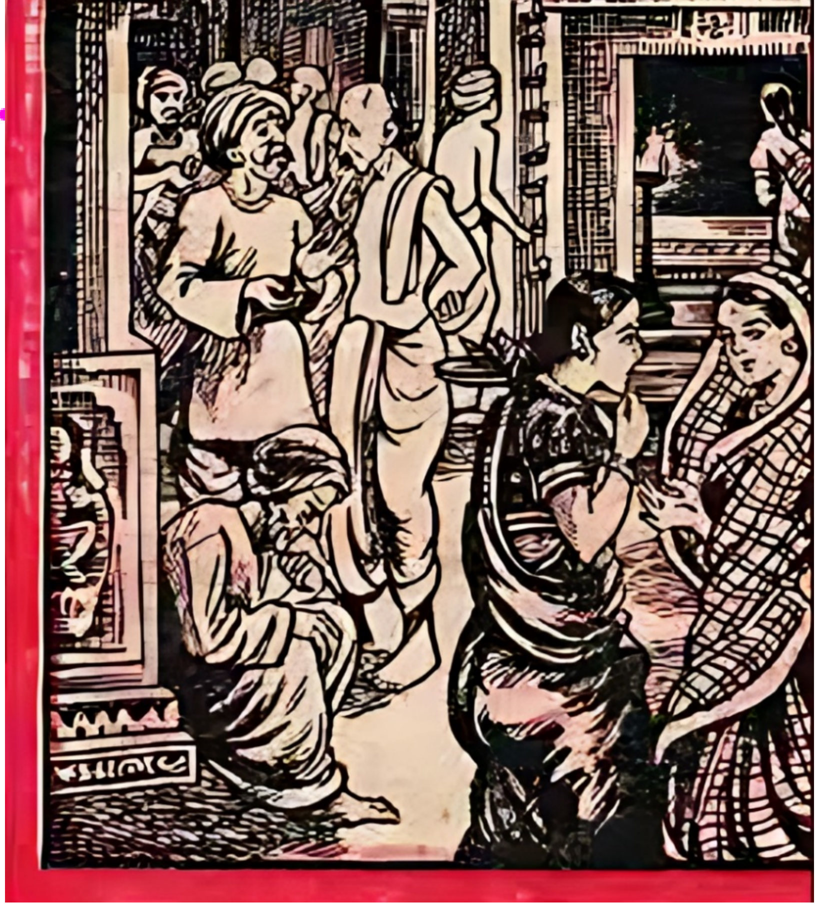
बुढ़ापे की वजह से बूढ़े-बूढ़ी का स्वभाव भी बहुत चिड़चिड़ा हो गया था। लेकिन पुण्डरीक कभी विचलित नहीं होता था। वह बच्चों के समान उनकी देखभाल करता था। जब जो चीज माँगते, झट उन्हें ला देता था।

इस तरह वह माँ-बाप की सेवा को ही तीर्थ मानकर वह घर पर रह गया। इधर अन्य भक्त लोग जय पाण्डुरङ्ग विट्ठल ! का नारा लगाते कीर्तन करते पण्ढरीपुर जा पहुँचे। वहाँ पहुँचकर भगवान के दर्शन के लिए जब वे

मन्दिर में गए तब देखा कि भगवान का तो कहीं पता नहीं ! मन्दिर सूना पड़ा था। विट्ठलनाथ का सिंहासन खाली पड़ा था।

भक्त लोग सब बहुत घबराए कि आखिर भगवान गए कहाँ ! वे लोग भगवान की राह देखते हुए बहुत देर तक बैठे रहे। लेकिन भगवान लौटकर न आए। निराश होकर वे लोग चले गए। दूसरे दिन भी आकर भक्तों ने भगवान की प्रतीक्षा की। लेकिन दूसरे दिन भी भगवान न लौटे। इस तरह बहुत दिनों तक भक्तों ने भगवान की प्रतीक्षा की। लेकिन भगवान का पता न चला। सहसा भगवान के इस तरह गायब हो जाने का रहस्य किसी की समझ में न आया। आखिर भक्त लोग सब निराश होकर उदास मन से अपने घर लौट गए।

भगवान विट्ठलनाथ मन्दिर से निकाल कर देवी सहित पुण्डरीक के घर चले आए थे। भक्तों की निराशा का यही कारण था। असल बात यह थी भगवान को जब मालूम हुआ कि उनके परम भक्त पुण्डरीक बूढ़े माँ-बाप को छोड़कर उनके दर्शन करने न आ सका। तो



वह स्वयं उसको दर्शन देने आए। यह रहस्य भक्तों को कैसे मालूम होता !

भगवान आकर जब पुण्डरीक के दरवाजे पर खड़े हो गए तो उस समय पुण्डरीक अपने बूढ़े माँ-बाप को नहला रहा था। भगवान ने पुण्डरीक को पुकारा -"पुण्डरीक ! मेरे प्यारे भक्त ! तुम मेरे पास पण्ढरीपुर नहीं आ सके। इसलिए मैं ही तुम्हारे पास आया हूँ।"

प्रभु ! जरा ठहरीये। मैं अभी आया बूढ़े पिताजी का नहाना हो गया। जरा उनके शरीर पोंछ डालूँ। नहीं तो उन्हें जुकाम हो जाएगा। जरा ठहरिए।" पुण्डरीक



बिठाकर उनकी आज्ञा लेकर भगवान के दर्शन करने आया।

इधर सुचारिता भगवान की ओर टकटकी लगाए देख रही थी। उसके पति ने तुरन्त बाहर जाकर भगवान का स्वागत नहीं किया। यह अपराध तो हुआ ही था। तिस पर तुर्रा यह कि भगवान को दरवाजे पर ठहरने के लिए कह दिया। न जाने भगवान अपने मन में कितना बिगड़े होंगे !

ने कहा। यह बातें सुनकर सुचरिता को बड़ा अचरज हुआ। वह सोचने लगी -"जब भगवान देवी सहित स्वयं दर्शन देने हमारे घर पधारे हैं, तब तुरन्त उनका स्वागत न करके जरा ठहरने को कहना क्या उचित है ? अगर कहीं भगवान नाराज हो गए तो ?" वह बहुत आतुर हो गई। लेकिन भगवान को जरा भी क्रोध न आया। वह शान्त भाव से देहली पर ज्यों के त्यों खड़े रह गए।

थोड़ी देर में पुण्डरीक ने माँ-बाप को अन्दर ले जाकर साफ कपड़े पहना दिए। फिर वह उन्हें पूजा पर

लेकिन यह क्या ? सुचारिता अपनी आंखों पर विश्वास न कर सकी। भगवान कहाँ चले गए ! उसे सहसा ऐसा मालूम हुआ मानो देहली पर भगवान नहीं उसके बूढ़े ससुर खड़े हैं। लेकिन उसके ससुर को तो पुण्डरीक ने अभी अभी नहला कर पूजा पर बिठाया था। फिर यह यहाँ कैसे आ गए ?

तब उसने अचरज के साथ देवी की ओर देखा। मालूम हुआ देवी की जगह उनकी बूढ़ी सास खड़ी है। अब सुचारिता के समझ में सबकुछ आ गया।



उसके पति पुण्डरीक ने बूढ़े माँ-बाप की सेवा के लिए तीर्थ-यात्रा छोड़ दी थी। इसलिए भगवान स्वयं उसको दर्शन देने उसके घर आ गए थे। इससे भगवान यह बताना चाहते थे कि बूढ़े माँ-बाप की सेवा करना भगवान की सेवा के समान है। इसी से भगवान बूढ़े सास-ससुर के रूप में दिखाई देने लगे।

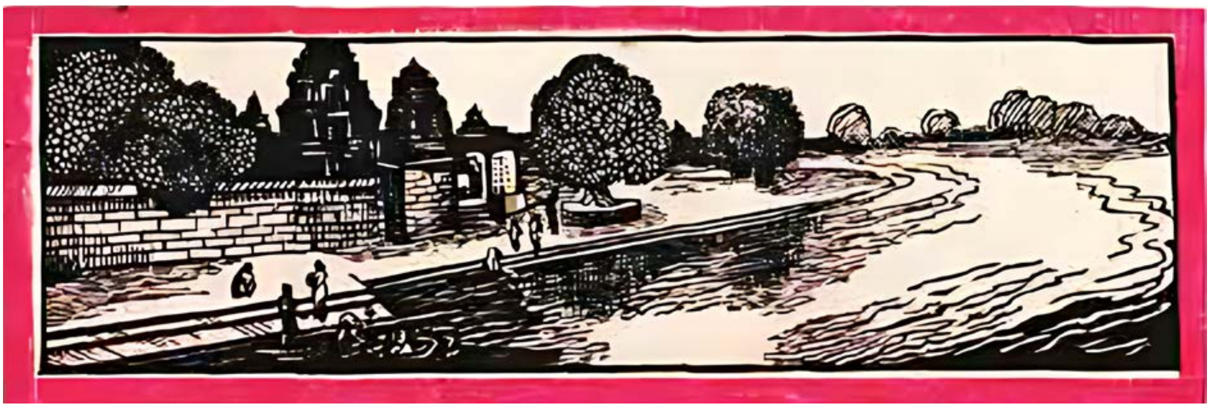
इतने में पुण्डरीक दण्डवत करके भगवान की स्तुति करने लगा -"हे गरुड़-वाहन ! जगन्नाथ ! पुण्डरीकाक्ष !" तब बहुत प्रसन्न होकर भगवान ने पुण्डरीक को आशीर्वाद दिया -"भक्त प्रवर ! पुण्डरीक ! तुमने भक्ति के साथ अपने बूढ़े माँ-बाप की जो सेवा की वह वास्तव में मेरी ही सेवा है। इसीलिए है पुत्र जो व चाहो माँगो। मैं सब कुछ देने को तैयार हूँ। सुचरिता अब बड़ी उत्सुकता से सुनने लगी कि देखें पतिदेव क्या वर माँगते हैं। पुण्डरीक ने कहा -"भगवान ! अन्य भक्तों की तरह हम पति-पत्नी भी हमेशा आपके सन्निकट रहना चाहते हैं। लेकिन बूढ़े माँ-बाप को छोड़कर हम पण्डरीपुर नहीं आ सकते। हम पर कृपा करके आप इतना कष्ट उठाकर हमारे घर आ गए हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप हमेशा के लिए यहीं रह जाइए। इससे अधिक में और कुछ नहीं चाहता।" यह सुनकर सुचरिता का आश्चर्य और भी बढ़ गया। वह सोचने लगी - "भगवान दर्शन देने तो आए हैं। किन्तु क्या वह हमेशा के लिए यहाँ रह जाएँगे ?"

लेकिन भगवान विट्ठलनाथ ने अपने भक्त की अभिलाषा पूर्ण करने के लिए उसी घर में उसी देहली पर रहना स्वीकार कर

लिया। इतना ही नहीं, उन्होंने गङ्गा नदी को बुलाकर कहा -"मैं यहीं पर रह जाना चाहता हूँ। इसलिए यह जगह कुछ ही दिनों में बहुत प्रसिद्ध हो जाएगी। दूर-दूर से भक्तगण यहाँ आने लगेंगे। उनके स्नान -पान के लिए यहाँ निर्मल जल वाली एक नदी चाहिए। इसलिए मेरी इच्छा है कि तुम इस गाँव से होकर बहो।"

गङ्गा नदी तुरन्त वहाँ से होकर बहने लगी। पुण्डरीक का गाँव "पुण्डरीक तीर्थ" बन गया। विट्ठलनाथ के दर्शन के लिए मानव ही नहीं देवता भी वहाँ आने लगे ,अब उसे गाँव के भक्तों के आनन्द का ठिकाना न रहा। पुण्डरीक वाली घटना से उन्हें अच्छी शिक्षा भी मिली। उन्हें मालूम हो गया कि जिन माँ-बाप ने उन्हें पाल-पोसकर बड़ा किया, बूढ़े हो जाने पर उनकी सेवा सुश्रुषा करना भगवान की सेवा से भी बड़ा पुण्यप्रद है।

सभी आदमियों के लिए कुछ धर्म बने हुए हैं। जैसे सन्तान के लिए माँ-बाप की सेवा करना, स्त्रियों के लिए पति की सेवा करना, धनियों के लिए गरीबों की मदद करना, तन्दुरुस्त लोगों के लिए बीमारों की सेवा करना इत्यादि। इन धर्म का पालन न करने से मनुष्य कितना ही पुण्य कार्य क्यों न करें, सब व्यर्थ हो जाते हैं। पुण्डरीक ने अपने धर्म का पालन किया। इसलिए भगवान स्वयं उसे खोजते हुए उसके घर आ गए। दूसरे भक्तों ने अपने धर्म का पालन नहीं किया। इसलिए उन्हें पण्ढरीपुर जाने पर भी भगवान के दर्शन न हुए।





वहाँ दूर देश में राजा अपने पड़ाव में सुख से सो रहा था। इतने में उसे ऐसा लगा जैसे कोई उसे थपकी देकर जगा रहा हो। उसके कानों में किसी के यह शब्द गूँजने लगे - "उठो राजा ! उठो। वहाँ तुम्हारी सन्तान भूखों तड़प रही है और तुम यहाँ निश्चिन्त सो रहे हो !"

राजा चौक कर जाग उठा। उसे ऐसा लगा कि जरूर उसकी बच्चियाँ किसी न किसी सङ्कट में पड़ गई है। उसने जल्दी-जल्दी गहने, कपड़े, खिलौने, मिठाइयाँ बगैरह खरीद कर अपने राज की ओर लौट पड़ा। महल के नजदीक आते ही राजा के घर लौटने की सूचना देने के लिए नगाड़ा बजा। राजा ने देखा कि बाहर आकर उसकी अगवानी करने वालों में उसकी बच्चियाँ नहीं है। यह देखकर उसके मन की व्याकुलता और भी बढ़ गई। और सीधे रत्नादेवी के महल में गया। "लड़कियाँ कहाँ हैं ?" राजा ने चारों ओर देखकर पूछा।

"आप पूछते हैं की लड़कियाँ कहाँ हैं। आपकी पहले रानी आई और मुझे मारपीट कर लड़कियों को अपने साथ ले गई।" रानी ने मुँह फुला कर कहा।

राजा ने सोचा कि उसके दूसरा विवाह करने की वजह से शायद लक्ष्मीदेवी को गुस्सा आ गया है और इसी से वह आकर अपनी सन्तान को ले गई है। अपने बच्चों को खोजने के लिए देशभर में उसने आदमी दौड़ाए। लेकिन जब कहीं उनका पता न चला, तो वह स्वयं उन्हें खोजने निकला।

इस तरह ढूँढ़ते ढूँढ़ते जब वह नगर के बाहर जङ्गल में गया, तो उसे जमीन पर कुछ पैरों के चिन्ह दिखाई दिए। सात छोटे चिन्ह थे और एक बड़ा। राजा ने सोचा कि यह सात चिन्ह उसी की लड़कियों के हैं और



बड़ा चिन्ह रानी लक्ष्मीदेवी के पैरों का है। अब उसे पूरा विश्वास हो गया कि रत्ना देवी ने जो कहा था वह सच था। वह उसी रास्ते से चल पड़ा और थोड़ी ही देर में उस मन्दिर के पास पहुँच गया जिसमें उसकी प्यारी बच्चियाँ भूखों पड़ी थी। मन्दिर में ताला लगा हुआ था। यह देखकर राजा को शक हो गया और ताला तुड़वाकर वह अन्दर चला गया। वहाँ जाकर देखता क्या है कि उसकी सातों बेटियां अधमारी पड़ी हुई हैं। राजा उन्हें उठाकर महल में ले आया। लड़कियों ने सौतेली माँ की क्रूरता की सारी कहानी राजा को सुना दी। तब राजा ने रत्नादेवी से अपना सारा सम्बन्ध तोड़ लिया और रात दिन उन लड़कियों के साथ रहने लगा।

तब राजा को मोहने के लिए रत्ना देवी ने जङ्गल से बहुत सी जड़ी-बूटियाँ मँगवाई।

एक दिन राजा स्नान करने गया। मौका देखकर रानी ने एक दासी द्वारा राजा के थाल में मोहन रस मिलवा दिया। खाना खाते ही जड़ी ने अपना असर दिखाया। सहसा राजा के मन में रत्नादेवी पर ऐसा मोह पैदा हो गया कि वह अपने को सम्भाल न सका। लड़कियाँ सो रही थी। राजा उठा और सीधे जाकर रत्नादेवी का दरवाजा खटखटाया। लेकिन रत्ना देवी ने किवाड़ नहीं खोला। वह अन्दर से ही बोली -"तुम्हें तो अपनी लड़कियाँ प्यारी हैं न ! फिर मेरे पास क्यों आए हो ? लौट जाओ। जब उन सबको मर आओगे, तभी मैं दरवाजा खोलूँगी।"

"हाय ! हाय ! कहीं अपने बच्चों को भी कोई मार डालता है ?" राजा चिल्ला उठा।

"अगर अपने हाथों मारना नहीं चाहते हो, तो जाकर घोर जङ्गल में छोड़ आओ।" रत्नादेवी ने कठोर स्वर में कहा। मोहन रस के प्रभाव से अन्धे बने हुए राजा ने रानी की बात मान ली। उसने अपने

महल में लौट कर लड़कियों को जगाया और कहा -"बेटियों ! उठो। मैं तुम सबको तुम्हारे ननिहाल ले जाऊँगा।" "हमारा ननिहाल ! हम लोगों ने तो कभी नहीं सुना था कि हमारा भी कहीं एक ननिहाल है।" लड़कियों ने अचरज से कहा। "दस बरस पहले उनसे हमारा मन-मुटाव हो गया था। इसीलिए हमने उनसे नाता तोड़ लिया था। लेकिन अब मैं सोचता हूँ कि तुम लोगों को ले जाकर एक बार उन्हें दिखा आऊँ।" राजा ने कहा। लड़कियाँ उठकर राजा के साथ चलने को तैयार हो गई। राजा को पूरी तरह अपने वश में जानकर रत्नादेवी ने बड़ी खुशी से जहर मिली रोटियाँ बनवाई और लड़कियों के लिए कलेवा तैयार कर दिया। एक अलग पोटली में उसने राजा के लिए रोटियाँ बाँध दी। उसने राजा से कह दिया -"देखो ! तुम लड़कियों की रोटियों में हाथ न लगाना और न उन्हें अपनी रोटियाँ देना।" राजा ने बिना जाने बुझे सिर हिला दिया। वह अपनी सातों लड़कियों को साथ लेकर पैदल ही जङ्गल की ओर चल दिया।

थोड़ी देर में गाँव पीछे रह गया और वे लोग घने जङ्गल में पहुँचे। इतने में सबसे





छोटी लड़की नागवती ने एक उड़ता कौवा देखा। उसने रोटियों की पोटली में से एक रोटी का टुकड़ा तोड़कर उसके सामने फेंक दिया। कौए ने टुकड़े में चोञ्च मारी और तुरन्त जमीन पर उलट पड़ा। क्षण में ही वह तड़प तड़प कर ठण्डा हो गया। यह देखकर नागवती को बड़ा अचरज हुआ। उसने रोटी का एक और टुकड़ा तोड़कर एक कुत्ते के सामने डाल दिया। खाते ही उसे कुत्ते ने भी चटपटा कर दम तोड़ दिया। "इन रोटियों में तो जहर मिला हुआ है। अगर हमने खाई होती, तो हमारी भी जान गई होती। मैं इन्हें कहीं फेंक दूँ तो कोई न कोई उन्हें खाकर नाहक अपनी जान गँवाएगा। इसलिए सबसे अच्छा यही होगा कि एक छोटा सा गड्ढा खोदकर इन्हें मिट्टी में गाड़ दें।" नागवती ने अपनी बहनों से कहा। तब लड़कियों ने एक छोटा सा गड्ढा खोदा और उसमें अपनी सब रोटियाँ गाड़ दी। राजा ने यह सब नहीं देखा। थोड़ी देर में वे बीच जङ्गल में पहुँच गए। अब बेचारी लड़कियों को जोर की भूख लगी। तब उनमें से एक ने आगे आगे चलने वाले पिता को रोक कर कहा -"पिताजी ! मुझे बहुत भूख लगी है। अपनी पोटली में से एक रोटी दीजिए न।" "बेटी ! मेरी पोटली में ये रोटियाँ नहीं है। कङ्कड पत्थर हैं। राह में जङ्गली जानवरों को मार भगाने के लिए मैंने इन्हें चलते वक्त पोटली में बाँध लिया था। थोड़ा और सब्र करो। तुम्हारा ननिहाल यहाँ से बहुत दूर नहीं है।" राजा ने जवाब दिया।

लेकिन वह लड़की वही जमीन पर बैठ गई और हठ करने लगी। तब राजा ने छड़ी लेकर उसे मारना शुरू कर दिया। तब बाकी लड़कियों ने आगे जाकर रोका। "पिताजी आप उसे मारिए मत। हम उसे समझा

देंगी।" यह कहकर उन्होंने उसे समझा-बुझा कर चुप कर दिया। सब लोग फिर आगे बढ़े।

चलते-चलते रात हो गई। तब राजा ने कहा -"जब तक हम लोग तुम्हारे ननिहाल पहुँचेंगे, तब तक सब लोग खर्राटे ले रहे होंगे। अँधेरे में हमें कोई पहचानेगा भी नहीं। इसलिए हम आज रात के लिए यही कहीं सो जाएँगे।" वे सब एक पेड़ के नीचे सो रहे। राजा बीच में लेट गया और लड़कियाँ उसके अगल-बगल लेट गई।

आखिर जब सभी लड़कियाँ सो गई, तब राजा धीरे से उठा। उसने अपनी जगह एक लकड़ी का कुन्दा रख दिया और उस पर एक चादर ओढ़ा दी। फिर वह चुपके से अपने नगर की ओर चल दिया। थोड़ी देर में सवेरा हो गया। राजा ने एक तालाब के किनारे पहुँचकर हाथ मुँह धोया और कलेवा करने बैठा। लेकिन जब उसने पोटली खोली तो देखा की रोटियों के बदले उसमें कङ्कड-पत्थर भरे थे।

"हाय ! मैं कैसा पापी हूँ। भूख से तड़पती हुई सन्तान को मैंने रोटी नहीं दी। भगवान ने मुझे अच्छा दण्ड दिया।"





राजा ने सोचा। लेकिन राजमहल में पहुँचते ही वह लड़कियों की बात भूल गया।

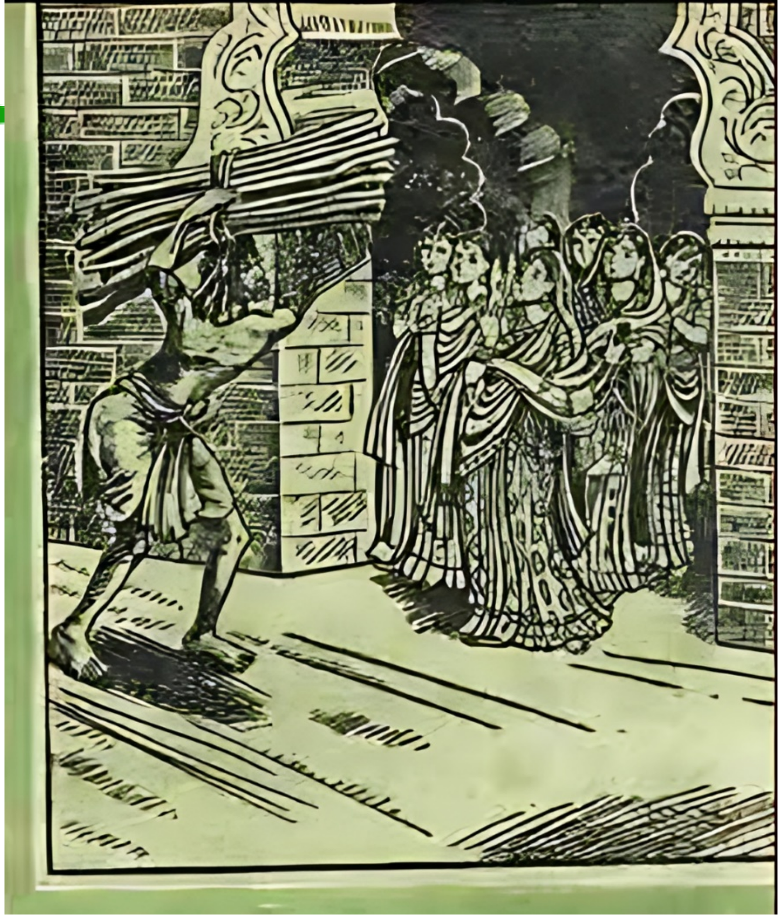
इधर सवेरा होते ही लड़कियाँ जागी। जागते ही उन्होंने पिता को पुकारा। लेकिन कोई जवाब न मिला। तब उन्होंने चादर हटा दी। देखा कि पिता की जगह वहाँ लकड़ी का एक कुन्दा पड़ा हुआ है। वह जोर-जोर से रोने लगी। थोड़ी देर बाद उन्होंने उठकर निकट के एक तालाब में नहाया-धोया। अब उनकी भूख और भी बढ़ गई। अन्तड़ियाँ कुलबुलाने लगी। चारों ओर जङ्गल ही जङ्गल दिखाई देता था। बेचारी अबोध लड़कियों को राह क्यों कर मालूम हो ? उसी समय श्रीनगर का राजा रामसिंह शिकार खेलते हुए उधर आ निकला। उसने इन सातों लड़कियों को देखा। उसने सोचा - "हाय ! यह मासूम लड़कियाँ ना जाने किस राजा की बेटियाँ हैं। सूरत देखने से ही मालूम हो जाता है कि उन्होंने दो-तीन दिन से कुछ खाया पिया नहीं है। उसने अपने सिपाहियों को बुलाया और खाने-पीने की चीज मँगाकर उन्हें भरपेट खिलाया पिलाया। फिर धीरे-धीरे उसने उनकी सारी कहानी जान ली। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने सुना कि यह सातों बहने उसी की भाँजियाँ हैं। क्योंकि वह वास्तव में लक्ष्मीदेवी का भाई था और दस वर्ष पहले बहनोई से मन-मुटाव हो जाने से उसने बहन के घर आना जाना छोड़ दिया था। रामसिंह अपनी भाँजियों को प्रेम के साथ श्रीनगर ले गया। उसके भी सात लड़के थे। उसने इन लड़कियों से उन सातों का ब्याह बड़ी धूमधाम से कर दिया। नागवती का विवाह सबसे छोटे राजकुमार श्यामसिंह के साथ हुआ।

* * * * * * * * * * * *

इधर राजा रणधीर सिंह का भाग्य पलट गया था। उनके बुरे दिन आ गए थे।

दुश्मनों ने उसके राज पर चढ़ाई करके उन्हें हरा दिया। उनका राज-पाट छिन गया। उन्हें वेश बदलकर अपने नगर से भाग जाना पड़ा। राजा ने रत्नादेवी के साथ पड़ोस के कई राजाओं के पास जाकर मदद माँगी। लेकिन उसका कोई फल न हुआ। दुश्मन ने वहाँ भी उनका पीछा किया। आखिर राजा ने रत्नादेवी से कहा -"अब यहाँ भी हमारा निबाह नहीं हो सकता। चलो, कुछ दिन तक हम कहीं छुप कर रहें। मेहनत मजदूरी करके पेट पाल लेंगे।" यह सोचकर वे दोनों जङ्गल में से होते हुए श्रीनगर पहुँचे। राह में उन्होंने कुछ सुखी लकडियाँ चुनकर एक गठ्ठर बाँधा। राजा ने रानी को नगर के बाहर एक पीपल के पेड़ के नीचे बिठाकर कहा -"तुम यहीं रहो। मैं शाम तक लकडियाँ बेचकर कुछ पैसे कमाकर यहाँ आ जाऊँगा।"

यह कहकर राजा लकड़ियों का गठ्ठर सिर पर रखकर नगर में बेचने निकला। जब वह हाँक लगाते हुए राजमहल के निकट पहुँचा तो उसकी आवाज सुनकर लड़कियों ने उसे पहचान लिया। उन्होंने उसे बुलाकर पूछा कि 'तुम कौन हो ?' जब राजा ने अपना नाम बताया तो उन्हें उसका सारा रहस्य मालूम हो



गया। लेकिन उनको उसकी करूण दशा देखकर दया आ गई। उन्होंने उसे अन्दर ले जाकर प्रेम से खिलाया-पिलाया।

इधर रत्ना देवी ने शाम तक अपने पति की राह देखी। लेकिन जब वह न आया, तब उसने सोचा -"इन मर्दों का कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। मालूम होता है चार पैसे कमाते ही राजा ने मुझसे मुँह चुरा लिया है।" यह सोचकर जङ्गल की और बढ़ी और वहाँ एक बाघ ने उसे हड़प लिया।

* * * * * * * * * * *

लेकिन राजा रणधीर सिंह का स्वास्थ्य भी पूरी तरह बिगड़ गया था। वह अब थोड़े ही

दिनों के मेहमान थे। चौबीसों घण्टे पलङ्ग पर पड़े रहते थे ,बहुत सी दवाइयाँ की गई। लेकिन कोई फायदा न हुआ। आखिर वह अपनी लड़कियों के बीच प्रसन्नचित्त से स्वर्ग चले गए। धूमधाम से उनका श्राद्ध कर्म किया गया।

* * * * * * * * * * *

तीन चार साल बीत गए। नागवती और उसकी बड़ी बहनें अपने पतियों के साथ सुख से दिन बिता रही थी। नागवती की बड़ी बहनों के अब तक कोई सन्तान न हुई। लेकिन नागवती के गर्भ रह गया। यह समाचार सुनकर सिर्फ उसकी बहनों को ही नहीं, बल्कि उसके जीजाओं और उसके पति को भी बड़ा आनन्द हुआ। राज में चारों ओर खुशियाँ मनाई गई। गरीबों को खाना और कपड़ा बाँटा गया।

इतने में नागवती के पति श्याम सिंह और उसके छः बड़े भाइयों को किसी काम से रामपुर जाना पड़ा। वे सब हथियार बाँध कर लैस हो गए। घोड़े पर चढ़कर उन्होंने किले के चौकीदार रामजतन को बुलाकर कहा -"रे रामजतन ! देख, हमारी गैरहाजिरी में अगर कोई साधु, सन्यासी फकीर या भीखमँगे आए, तो उन्हें किले के दरवाजे पर तुम ही भीख देकर भेज देना। अगर कोई परदेसी आए, तो उन्हें किले में प्रवेश न करने देना । अगर किसी ने किले में कदम भी रखा तो समझ ले कि तेरी जान की खैर नहीं। खबरदार !"

फिर श्याम सिंह ने अपनी पत्नी नागवती को बुलाकर कहा -"रानी ! मैंने दरवाजे के बाहर जमीन पर सात लकीरें खींच दी है। जब तक मैं परदेस से लौट कर ना आऊँ, तुम भूल कर भी उन लकीरों के बाहर कदम न रखना।"

इसके बाद सातों भाई अपनी सारी सेना लेकर रामपुर की ओर रवाना हो गए। [संशेष]



CHANDAMAMA (Hindi) MAY 1950 Regd. No. M. 5452



मृगराज